

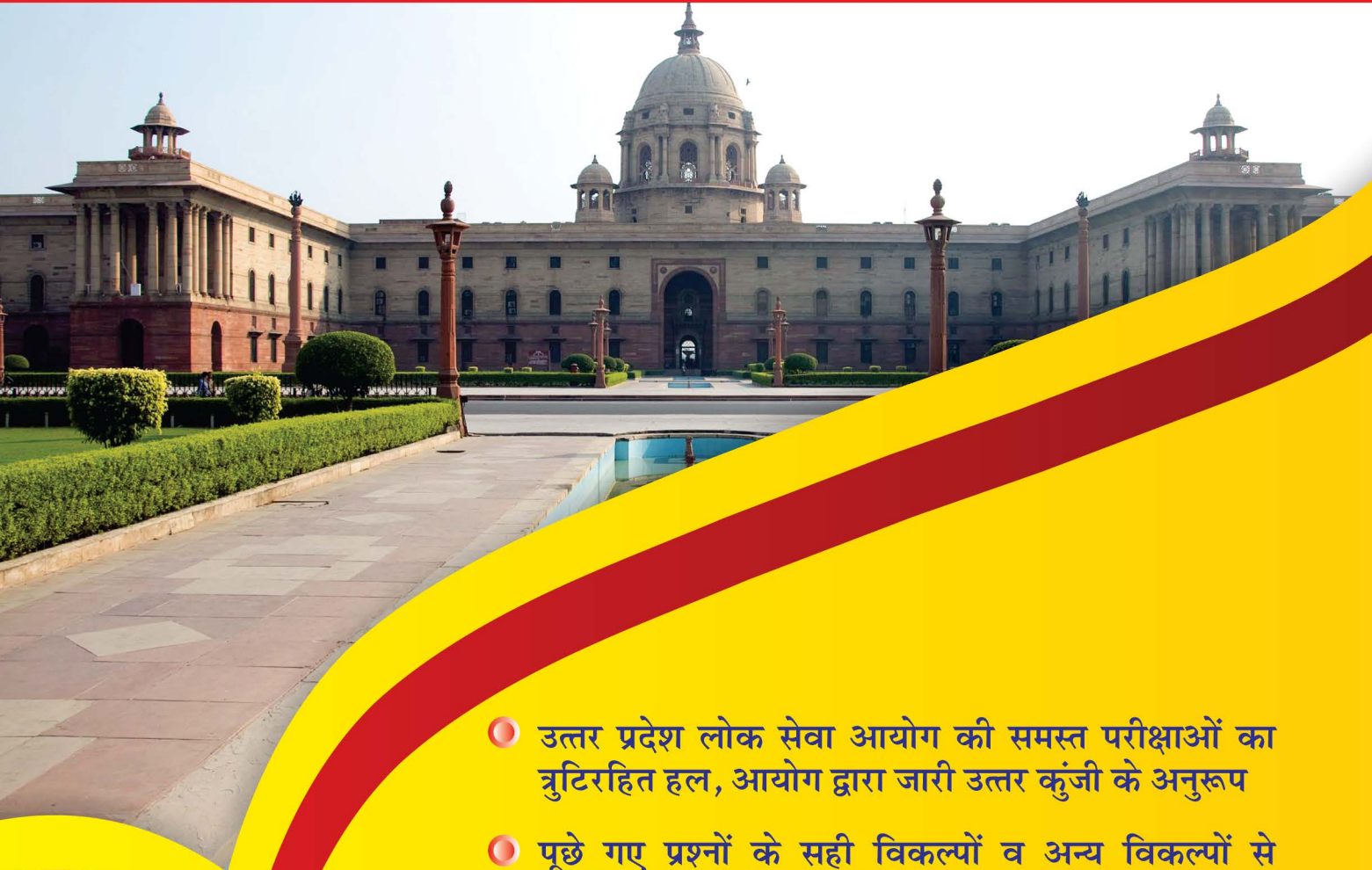


CHRONICLE

Nurturing Talent Since 1990

UPPSC

भारतीय राजव्यवस्था हल प्रश्न-पत्र



- उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की समस्त परीक्षाओं का त्रुटिरहित हल, आयोग द्वारा जारी उत्तर कुंजी के अनुरूप
- पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्पों व अन्य विकल्पों से संबंधित जानकारी, अतिरिक्त पाठ्य सामग्री के साथ
- भविष्य में आयोजित होने वाली समस्त प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु उपयोगी

UPPSC

भारतीय राजव्यवस्था हल प्रश्न-पत्र

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग की समस्त परीक्षाओं का त्रुटिरहित
हल, आयोग द्वारा जारी उत्तर कुंजी के अनुरूप

पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्पों व अन्य विकल्पों से संबंधित
जानकारी, अतिरिक्त पाठ्य सामग्री के साथ

भविष्य में आयोजित होने वाली समस्त प्रतियोगी
परीक्षाओं की तैयारी हेतु उपयोगी

संपादक

एन. एन. ओझा

संकलन व हल

क्रॉनिकल संपादकीय समूह

अनुक्रमणिका

भारतीय राजव्यवस्था

संवैधानिक ढांचा

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि.....	3
2. संविधान का निर्माण और विशेषता.....	6
3. संविधान की प्रस्तावना.....	12
4. संविधान की मूल संरचना.....	16
5. भारतीय संविधान के स्रोत.....	17
6. संघ एवं राज्य क्षेत्र.....	18
7. नागरिकता.....	25
8. मौलिक अधिकार.....	26
9. राज्य के नीति निर्देशक तत्व.....	36
10. मूल कर्तव्य.....	40
11. संविधान संशोधन.....	44

सरकार की प्रणाली

12. संसदीय एवं संघीय व्यवस्था.....	49
13. केंद्र राज्य संबंध.....	52
14. आपात उपबंध.....	56
15. अंतरराज्यीय संबंध.....	58

केंद्र सरकार

16. राष्ट्रपति.....	61
17. उपराष्ट्रपति.....	67
18. प्रधानमंत्री.....	69
19. केन्द्रीय मंत्रिपरिषद्.....	71
20. संसद.....	74
21. लोक सभा.....	84
22. राज्य सभा.....	89
23. संसद की समितियां.....	92

राज्य सरकार

24. राज्यपाल.....	97
25. राज्य विधानमंडल.....	99

न्यायपालिका

26. सर्वोच्च न्यायालय.....	103
27. उच्च न्यायालय.....	109
28. भारतीय न्यायपालिका : विविध आयाम.....	110

स्थानीय स्वशासन

29. पंचायतीराज.....	112
30. शहरी स्वशासन.....	122

संवैधानिक निकाय

31. निर्वाचन आयोग.....	124
32. संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग.....	125
33. वित्त आयोग.....	126
34. नियंत्रक एवं महालेखा परीक्षक.....	128
35. महान्यायवादी और महाधिवक्ता.....	130

गैर – संवैधानिक निकाय

36. नीति एवं योजना आयोग.....	133
37. मानवाधिकार आयोग.....	134
38. सतर्कता आयोग.....	135
39. लोकपाल एवं लोकायुक्त.....	135
40. अन्य आयोग.....	135

विविध

41. भारतीय संविधान के अनुच्छेद/भाग.....	137
42. निर्वाचन प्रणाली.....	146
43. राजभाषा.....	150
44. कुछ वर्गों के लिए विशेष उपबंध.....	151
45. संविधान की अनुसूचियां.....	158
46. उत्तर प्रदेश विशेष (राजव्यवस्था).....	162

भारतीय राजव्यवस्था

संवैधानिक ढांचा

1. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्रश्न: ब्रिटिश इण्डिया के निम्नलिखित में से किस अधिनियम ने सामूहिक कार्यचालन के स्थान पर 'विभाग' या 'विभागीय पद्धति' द्वारा वायसराय की कार्यकारी परिषद पर उनके प्राधिकार को और अधिक बल प्रदान किया?

- (a) भारतीय परिषद अधिनियम, 1861
- (b) भारत सरकार अधिनियम, 1858
- (c) भारतीय परिषद अधिनियम, 1892
- (d) भारतीय परिषद अधिनियम, 1909

U.P.P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर: (a), भारतीय परिषद अधिनियम-1861 का निर्माण देश के प्रशासन में भारतीयों को शामिल करने के उद्देश्य से बनाया गया था। इस अधिनियम ने सरकार की शक्तियों और कार्यकारी व विधायी उद्देश्य हेतु गवर्नर जनरल की परिषद की संरचना में बदलाव किया। यह प्रथम अवसर था, जब गवर्नर जनरल की परिषद के सदस्यों को अलग-अलग विभाग सौंपकर विभागीय प्रणाली की शुरुआत की।

व्याख्या: वायसराय की परिषदों का विस्तार किया गया और कानून निर्माण के उद्देश्य से अतिरिक्त सदस्यों की संख्या न्यूनतम 6 और अधिकतम 12 तक कर दी गयी। ये सदस्य गवर्नर जनरल द्वारा नामित किये जाते थे और इनका कार्यकाल दो साल था।

❖ कैनिंग ने 1859 ई. में विभागीय प्रणाली की शुरुआत की, जिसके तहत गवर्नर जनरल की परिषद के सदस्यों को अलग-अलग विभाग सौंपे गए। लॉर्ड कैनिंग ने 1862 ई. में तीन भारतीय सदस्यों को अपनी परिषद में शामिल किया; जिनमें बनारस के राजा, पटियाला के राजा और सर दिनकर राव शामिल थे।

प्रश्न: यह किसने कहा- "मुझे इस आरोप के संबंध में कोई क्षमा नहीं मांगनी है कि संविधान के प्रारूप में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1935 के एक बड़े भाग को पुनः उत्साहित कर दिया गया है"?

- (a) डॉ. राजेंद्र प्रसाद
- (b) सरदार पटेल
- (c) जवाहर लाल नेहरू
- (d) डॉ. बी. आर. अंबेडकर

[U.P.P.C.S (Mains) - 2015 Paper-II]

उत्तर: (c), 4 नवंबर, 1948 को संविधान सभा में संविधान के प्रारूप को विचार के लिए पेश करते समय डॉ. अंबेडकर ने प्रारूप की कुछ आलोचना का उत्तर देते हुए कहा कि संविधान के प्रारूप में गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट, 1935 के अधिकांश प्रावधान को ज्यों का त्यों शामिल कर लिया गया है, मैं उसके बारे में कोई क्षमा याचना नहीं करता।

व्याख्या: डॉ. भीमराव अंबेडकर की अध्यक्षता में 29 अगस्त, 1947 को प्रारूप समिति की नियुक्त की गई। इस समिति द्वारा तैयार प्रारूप समिति को 21 फरवरी, 1948 को संविधान सभा के अध्यक्ष को पेश किया गया।

❖ डॉ. अंबेडकर के अनुसार किसी से उधार लेने में कोई शर्म की बात नहीं है। इसमें कोई चोरी नहीं है। संविधान के मूल विचारों के बारे में किसी का कोई पेटेंट अधिकार नहीं है।

प्रश्न: निम्नलिखित में से किस एक अधिनियम द्वारा भारत में संघीय न्यायालय की स्थापना की गयी थी?

- (a) भारतीय परिषद अधिनियम, 1831
- (b) भारतीय सरकार अधिनियम, 1909
- (c) भारतीय सरकार अधिनियम, 1919
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Pre) 2014

उत्तर: (d), भारत में संघीय न्यायालय की स्थापना भारत शासन अधिनियम, 1935 के अंतर्गत 1 अक्टूबर, 1937 को की गई थी।

व्याख्या: यह भारत शासन अधिनियम, 1935 के आठ प्रमुख प्रावधानों (संघात्मक सरकार, केन्द्र में द्वैध शासन, प्रांतों में स्वायत्त शासन, द्विसदनीय केन्द्रीय विधायिका, प्रांतीय शासन व्यवस्था, प्रांतीय विधानमण्डल, केन्द्र व प्रांतों के मध्य शक्ति का विभाजन तथा संघीय न्यायालय) में से एक है।

प्रश्न: भारत की संवैधानिक विकास भारत का संविधान अंगीकृत एवं अधिनियमित हुआ था -

- (a) 26 जनवरी, 1950 को
- (b) 11 फरवरी, 1948 को
- (c) 26 नवम्बर, 1949 को
- (d) उपर्युक्त में से किसी तिथि को नहीं

U.P.P.C.S. (Mains) - 2013 Paper-II

उत्तर: (c), भारतीय संविधान 26 नवम्बर, 1949 ई. को अंगीकृत और अधिनियमित किया गया।

व्याख्या: इसमें कुल 22 भाग, 395 अनुच्छेद और 8 अनुसूचियां थीं। वर्तमान समय में 22 भाग, 395 अनुच्छेद एवं 12 अनुसूचियां हैं। भारतीय संविधान के निर्माण में 2 वर्ष 11 महीना और 18 दिन लगे।

प्रश्न: एक 'संघीय व्यवस्था' और 'केन्द्र' में 'द्वैध शासन' भारत में लागू किया गया था

- (a) 1909 के अधिनियम द्वारा
- (b) 1919 के अधिनियम द्वारा
- (c) 1935 के अधिनियम द्वारा
- (d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Mains) - 2013 Paper-II

उत्तर: (c), 1935 भारत शासन अधिनियम की निम्न विशेषताएँ हैं- अखिल भारतीय संघ प्रांतीय स्वायत्तता; केन्द्र में द्वैध शासन की स्थापना; संघीय न्यायालय की व्यवस्था; ब्रिटिश संसद की सर्वोच्चता, भारत परिषद का अंत; साम्प्रदायिक निर्वाचन पद्धति का विस्तार; वर्ष 1909 में भारत परिषद अधिनियम, जिसे मार्ले-मिंटो सुधार भी कहा जाता है, लाया गया।

सरकार की प्रणाली

12. संसदीय एवं संघीय व्यवस्था

प्रश्न: सर्वप्रथम संसदात्मक सरकार किस देश में आरंभ की गयी?

- (a) ग्रेट ब्रिटेन में (यू.के.) (b) बेल्जियम में
(c) फ्रांस में (d) स्विट्जरलैण्ड में

U.P.P.C.S. (Pre) 2018

उत्तर: (a), सर्वप्रथम संसदात्मक प्रकार की सरकार का गठन ग्रेट ब्रिटेन में किया गया था।

व्याख्या: ब्रिटेन की संसदीय प्रकार की सरकार संवैधानिक राजतंत्रात्मक संसदीय प्रणाली से परिचालित होती है। ब्रिटिश संसद को विश्व की संसदों की जननी कहा जाता है।

प्रश्न: भारत एक गणतंत्र है, जिसमें अन्तर्निहित है-

- (a) राज्य का अध्यक्ष निर्वाचित होता है
(b) देश स्वतंत्र है
(c) देश में एक जनतांत्रिक व्यवस्था की सरकार है
(d) देश में अंतिम सत्ता संसद में निहित है

U.P.P.C.S. (Mains) 2017 Paper-II

उत्तर: (a), भारत एक गणतंत्र है, इसका अर्थ है कि भारत में वंशानुगत शासन नहीं है तथा राज्य का अध्यक्ष निर्वाचित होता है।

व्याख्या: भारत में गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को मनाया जाता है और 26 जनवरी, 1950 को भारत ने अपना संविधान अपनाया तथा ब्रिटिश डोमिनियन से एक गणतंत्र तक भारत के परिवर्तन के रूप में मनाया।

प्रश्न: भारत एवं अमेरिका की राजनीतिक व्यवस्थाओं के बीच निम्नलिखित में से कौन-सी विशेषताएं समान हैं?

1. अवशिष्ट शक्तियां केन्द्र के पास हैं।
 2. अवशिष्ट शक्तियां राज्यों के पास हैं।
 3. राष्ट्रपति के पास पॉकेट वीटो की शक्ति है।
 4. उच्च सदन में कुछ मनोनीत सदस्य होते हैं।
- (a) केवल 3 (b) केवल 3 तथा 4
(c) केवल 2, 3 तथा 4 (d) केवल 1, 3 तथा 4

U.P.P.C.S. (Pre) 2017

उत्तर: (a), राष्ट्रपति की पॉकेट वीटो शक्ति का अधिकार दोनों देशों के बीच समान है।

व्याख्या: भारत एवं अमेरिका द्वारा गणतंत्रात्मक व्यवस्थाओं का चयन किया गया है, जिससे दोनों जगह राष्ट्रपति शासन का प्रमुख है। दोनों देशों के राष्ट्रपति को जेबी विटो अधिकार प्राप्त है। भारत में अवशिष्ट शक्तियां केन्द्र में तो अमेरिका में राज्यों में निहित है। उच्च सदन में सदस्यों की नियुक्ति के मामले में अमेरिका में सभी सदस्य प्रत्येक राज्य से दो तथा भारत में प्रत्येक राज्य की जनसंख्या अनुसार अप्रत्यक्ष रूप से एवं कुछ सदस्य (12 सदस्य) राष्ट्रपति द्वारा मनोनीत किये जाते हैं।

प्रश्न: निम्नलिखित में से कौन भारतीय संविधान की विशेषता नहीं है?

- (a) संसदात्मक सरकार (b) अध्यक्षीय सरकार
(c) स्वतंत्र न्यायपालिका (d) संघात्मक सरकार

U.P.P.C.S. (Mains) - 2015 Paper-II

उत्तर: (b), भारतीय संविधान में अध्यक्षीय प्रकार की सरकार की संकल्पना को शामिल नहीं किया गया है।

व्याख्या: भारतीय संविधान ने अमेरिका की अध्यक्षीय प्रणाली की वजाए ब्रिटेन के संसदीय तंत्र को अपनाया है। संसदीय व्यवस्था विधायिका और कार्यपालिका के मध्य समन्वय व सहयोग के सिद्धांत पर आधारित है, जबकि अध्यक्षीय प्रणाली दोनों के बीच शक्तियों के विभाजन के सिद्धांत पर आधारित है।

- ❖ संसदीय प्रणाली को सरकार के बेस्टमिस्टर रूप, उत्तरदायी सरकार और मंत्रिमंडल सरकार के नाम से जाना जाता है। संविधान केवल केंद्र में ही नहीं, बल्कि राज्य में भी संसदीय प्रणाली की स्थापना करता है।
- ❖ भारतीय संविधान एक ऐसी न्यायालय की स्थापना करता है, जो अपने आपमें एकीकृत होने के साथ-साथ स्वतंत्र है। भारत की न्याय व्यवस्था में सर्वोच्च न्यायालय शीर्ष पर है, इसके नीचे राज्य स्तर पर उच्च न्यायालय है।
- ❖ राज्यों में उच्च न्यायालय के नीचे क्रमवार अधीनस्थ न्यायालय है, जैसे- जिला अदालत व अन्य निचली अदालतें। न्यायालयों का एकल तंत्र, केंद्रीय कानूनों के साथ-साथ राज्य कानूनों को लागू करता है। हालांकि अमेरिका में संघीय कानूनों को संघीय न्यायपालिका और राज्य कानूनों को राज्य न्यायपालिका लागू करती है।
- ❖ भारत का संविधान संघीय सरकार की स्थापना करता है। अनुच्छेद 1 में भारत का उल्लेख राज्यों के संघ के रूप में किया गया है।
- ❖ इसके दो अभिप्राय हैं- पहला, भारतीय संघ राज्यों के बीच हुए किसी समझौता का निष्कर्ष नहीं है और दूसरा किसी भी राज्य को संघ से अलग होने का अधिकार नहीं है।
- ❖ **नोट:** संविधान में कहीं भी संघीय शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है।

प्रश्न: निम्न में से कौन एक भारत के संविधान का संघीय लक्षण नहीं है?

- (a) केन्द्र तथा राज्यों के बीच शक्ति का बंटवारा
(b) पूर्ण रूप से लिखित संविधान
(c) एकहरी नागरिकता
(d) स्वतंत्र न्यायपालिका

U.P.P.C.S. (Pre) 2015

उत्तर: (c), एकल नागरिकता भारतीय संविधान का संघात्मक लक्षण न होकर एकात्मक लक्षण है।

केंद्र सरकार

16. राष्ट्रपति

प्रश्न: निम्नलिखित में से किसने भारत के राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने के पूर्व उप-राष्ट्रपति के पद पर कार्य नहीं किया था?

- (a) आर. वेंकटरमण (b) नीलम संजीवा रेड्डी
(c) डॉ. जाकिर हुसैन (d) डॉ. शंकर दयाल शर्मा

U.P.P.C.S. (Pre) - 2022

उत्तर: (b), नीलम संजीव रेड्डी राष्ट्रपति बनने से पूर्व उप राष्ट्रपति के पद पर कभी नहीं रहे।

व्याख्या: वे भारत के पहले गैर काँग्रेसी राष्ट्रपति थे।

❖ नव-गठित राजनीतिक दल जनता पार्टी ने इनको राष्ट्रपति का प्रत्याशी बनाया था।

प्रश्न: निम्नलिखित में से कौन से भारतीय राष्ट्रपति लोक सभा अध्यक्ष भी रहे हैं?

- (a) फखरुद्दीन अली अहमद
(b) डॉ. शंकर दयाल शर्मा
(c) डॉ. जाकिर हुसैन
(d) नीलम संजीव रेड्डी

U.P.P.C.S. RO/ARO (Pre) - 2021

उत्तर: (d), फखरुद्दीन अली अहमद, डॉ. शंकरदयाल शर्मा एवं डॉ. जाकिर हुसैन में से नीलम संजीव रेड्डी राष्ट्रपति से पहले लोक सभा अध्यक्ष भी रहे हैं।

व्याख्या: फखरुद्दीन अली अहमद भारत के पांचवें राष्ट्रपति थे। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। वे 24 अगस्त 1974 से लेकर 11 फरवरी 1977 तक राष्ट्रपति रहे। 1938 में बारदोली के नेतृत्व उन्हें वित्तमंत्री भी बनाया गया। 1940 में सत्याग्रह आंदोलन एवं 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन के समर्थन की वजह से जेल गए।

❖ डॉ. शंकरदयाल शर्मा भारत के नवें राष्ट्रपति थे। राष्ट्रपति बनने से पूर्व यह भारत के आठवें उपराष्ट्रपति भी रहे हैं। डॉ. शंकर दयाल शर्मा स्वर्ण पदक सभ्य प्रतिष्ठित भारतीय विश्वविद्यालयों में सम्मानित किया है।

❖ डॉक्टर जाकिर हुसैन स्वतंत्रता सेनानी एवं भारत के तीसरे राष्ट्रपति थे तथा वह प्रथम मुस्लिम राष्ट्रपति थे। शिक्षा और राजनीति के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने के लिए वर्ष 1963 में डॉ. जाकिर हुसैन को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान "भारत रत्न" से सम्मानित किया गया।

❖ नीलम संजीव रेड्डी भारत के छठे राष्ट्रपति थे।

प्रश्न: भारत के राष्ट्रपति के विशेष अभिभाषण के सन्दर्भ में निम्नांकित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

1. राष्ट्रपति, लोकसभा के साधारण निर्वाचन के पश्चात प्रथम सत्र और प्रत्येक वर्ष के प्रथम सत्र के आरंभ में संसद के दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करता है।
2. राष्ट्रपति अपने अभिभाषण में संसद को उसके आह्वान के कारणों के विषय में सूचित करता है।

सही उत्तर का चयन, नीचे दिए गए कूट की सहायता से कीजिए।
कूट:

- (a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 तथा 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

U.P.P.C.S. (Pre) 2021

उत्तर: (c), संविधान के अनुच्छेद 87 में दिये गए प्रावधान के अनुसार राष्ट्रपति विधायी शक्तियों के अंतर्गत दो बार संसद के दोनों सदनों को संबोधित करता है- प्रत्येक नए चुनाव के बाद तथा प्रत्येक वर्ष संसद के प्रथम अधिवेशन को।

व्याख्या: संसद के किसी एक सदन या एक साथ दोनों सदनों के सामने राष्ट्रपति के अभिभाषण का प्रावधान संविधान में किया गया है। इसका प्रावधान भारत सरकार अधिनियम, 1919 में किया गया था और 1921 से यह चला आ रहा है। राष्ट्रपति जो अभिभाषण देते हैं, वह सरकार ही तैयार करती है।

❖ इसके अंतर्गत राष्ट्रपति के विशेष अभिभाषण में सरकार की आगे की नीतियों, प्राथमिकताओं और योजनाओं का उल्लेख किया जाता है।

प्रश्न: यदि किसी समय राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति दोनों का पद रिक्त हो जाए, तब राष्ट्रपति का कार्य कौन करेगा?

- (a) प्रधानमंत्री
(b) लोकसभा अध्यक्ष
(c) भारत के प्रधान न्यायाधीश
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

U.P.P.C.S. RO/ARO (Mains) - 2021

उत्तर: (c), यदि किसी समय राष्ट्रपति एवं उपराष्ट्रपति दोनों का पद रिक्त हो जाए, तब राष्ट्रपति का कार्य भारत का मुख्य न्यायाधीश कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में कार्य करेगा तथा उसके का निर्वहन करेगा।

प्रश्न: भारतीय संविधान के निम्नलिखित अनुच्छेदों में से कौन-सा भारतीय राष्ट्रपति के महाभियोग से संबंधित है?

- (a) अनुच्छेद 39 (b) अनुच्छेद 60
(c) अनुच्छेद 61 (d) उपरोक्त में से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Mains) 2017 Paper-II

उत्तर: (c), भारतीय राष्ट्रपति पर महाभियोग की प्रकिया अनुच्छेद 61 में वर्णित है।

राज्य सरकार

24. राज्यपाल

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गए कूट से अपना उत्तर चुनिए:

1. राज्यपाल को उच्च न्यायाल के न्यायाधीश की नियुक्ति का अधिकार नहीं है
2. वह विधानमण्डल का हिस्सा नहीं है
3. उन्हें विधान परिषद में कुछ सदस्यों को मनोनीत करने का अधिकार है
4. उनके पास कोई न्यायिक शक्ति नहीं है

कूट:

- (a) 1 और 2 सही हैं (b) 1 और 3 सही हैं
(c) 2 और 4 सही हैं (d) सभी सही हैं

U.P.P.C.S. (Pre) 2017

उत्तर: (b), अनुच्छेद 217(1) उच्च न्यायालय में न्यायाधीश की नियुक्ति से संबंधित है। अनुच्छेद 217(1) के अनुसार उच्च न्यायालय में न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा उस राज्य के राज्यपाल की सलाह पर की जाती है।

व्याख्या: अनुच्छेद 168(1) के अनुसार राज्य विधानमण्डल राज्यपाल, विधान सभा तथा विधान परिषद के 1/6 सदस्यों को राज्यपाल द्वारा विशिष्ट क्षेत्रों यथा साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारिता एवं समाजसेवा में विशेष ज्ञान एवं अनुभव वाले व्यक्तियों को मनोनीत किया जाता है।

❖ अनुच्छेद 168 राज्यपाल को राज्य विधि के सम्बन्ध में दण्ड के लघुकरण, परिहार एवं निलम्बन (मृत्यु दण्ड एवं केन्द्रीय विधि तथा अन्य राज्य विधि को छोड़कर) का अधिकार देता है।

प्रश्न: जब एक ही व्यक्ति को दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जाता है, तो उस राज्यपाल को संदेय उपलब्धियाँ और भत्ते होंगे

- (a) राज्यपाल की व्यक्त इच्छानुसार
(b) राष्ट्रपति के निर्णयानुसार
(c) गृह मन्त्रालय के निर्णयानुसार
(d) इसे उन राज्यों के बीच ऐसे अनुपात में आबंटित किया जाएगा, जैसा राष्ट्रपति आदेश द्वारा अवधारित करें।

U.P.P.C.S. (Mains) - 2016 Paper-II

उत्तर: (d), अनु. 158 (3क) के अनुसार जब एक ही व्यक्ति दो या अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जाता है, वहाँ उस राज्यपाल को सदैव उपलब्धियाँ और भत्ते उन राज्यों के बीच ऐसे अनुपात में आबंटित किए जाएंगे, जो राष्ट्रपति आदेश द्वारा अवधारित करें।

व्याख्या: संविधान के अनु. 155 के अनुसार राज्य के राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति अपने हस्ताक्षर और मुद्रा सहित अधिपत्र द्वारा करेगा।

प्रश्न: निम्नलिखित में से क्या सत्य नहीं है?

- (a) राष्ट्रपति या राज्यपाल को शासकीय कार्यों के लिए विधिक कार्यवाही से उन्मुक्ति है।
(b) कोई न्यायालय राज्यपाल को किसी कर्तव्य पालन के लिए विवश नहीं कर सकता।
(c) एक राज्यपाल को व्यक्तिगत कार्यों हेतु सिविल कार्यवाही लाने के लिए दो मास की लिखित सूचना अवश्य देनी होगी।
(d) मंत्रियों द्वारा राष्ट्रपति या राज्यपाल को दिए गए सलाह को जाँचने के लिए न्यायालय अधिकृत है।

U.P.P.C.S. (Mains) - 2016 Paper-II

उत्तर: (d), संविधान के अनुच्छेद 163(3) में मंत्रियों द्वारा राष्ट्रपति या राज्यपाल को दिए गए सलाह को जांचने के लिए न्यायालय अधिकृत नहीं है। शेष सभी कथन राज्यपाल/राष्ट्रपति के सन्दर्भ में सही हैं।

व्याख्या: अनु. 163(2) के तहत यदि कोई प्रश्न उठता है कि कोई विषय ऐसा है या नहीं, जिसके संबंध में इस संविधान द्वारा या इसके अधीन राज्यपाल से यह अपेक्षित है कि वह अपने विवेकानुसार कार्य करे तो राज्यपाल का अपने विवेकानुसार किया गया निश्चित अंतिम होगा। अनु. 163(3) के अनुसार इस प्रश्न की किसी न्यायालय में जांच नहीं की जाएगी कि क्या मंत्रियों ने राज्यपाल को कोई सलाह दी और यदि दी तो क्या दी।

प्रश्न: भारत के संविधान में निम्न में से किसके विरुद्ध अभियोग चलाने का प्रावधान नहीं है?

- (a) राष्ट्रपति के
(b) राज्य के राज्यपाल के
(c) भारत के मुख्य न्यायाधीश के
(d) भारत के उपराष्ट्रपति के

U.P.P.C.S. (Mains) - 2009 Paper-II

उत्तर (b), राज्य के राज्यपाल के प्रति महाभियोग चलाने का प्रावधान नहीं किया गया है। अनुच्छेद 153 के अनुसार प्रत्येक राज्य के लिये एक राज्यपाल होगा। एक व्यक्ति को दो या दो से अधिक राज्यों का राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है।

व्याख्या: महाभियोग का उल्लेख संविधान के अनु. 61

❖ राज्यपाल केंद्र सरकार का एक नामित व्यक्ति होता है, जिसे राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है।

❖ संविधान के मुताबिक, राज्य का राज्यपाल दोहरी भूमिका अदा करता है। वह राज्य के मंत्रिपरिषद (CoM) की सलाह मानने को बाध्य राज्य का संवैधानिक प्रमुख होता है। वह केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।

न्यायपालिका

26. सर्वोच्च न्यायालय

प्रश्न: भारत का सर्वोच्च न्यायालय एक “अभिलेख न्यायालय” है।

इसका आशय है कि-

- इसे अपने सभी निर्णयों का अभिलेख रखना होता है।
- इसके सभी निर्णयों का साक्ष्यात्मक मूल्य होता है और इस पर किसी भी न्यायालय में प्रश्न चिह्न नहीं लगाया जा सकता है।
- इसे अपनी अवमानना करने वालों को दण्डित करने की शक्ति है।
- इसके निर्णयों के विरुद्ध कोई अपील नहीं की जा सकती।

U.P.P.C.S. (Pre) 2008

उत्तर: (b), अभिलेखों के न्यायालय के रूप में सर्वोच्च न्यायालय के पास दो शक्तियां हैं-

व्याख्या: अनुच्छेद 124 (1) के तहत भारतीय संविधान में कहा गया है कि भारत का एक सर्वोच्च न्यायालय होगा जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश (CJI) होगा तथा सात से अधिक अन्य न्यायाधीश नहीं हो सकते जब तक कि कानून द्वारा संसद अन्य न्यायाधीशों की बड़ी संख्या निर्धारित नहीं करती है।

- सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय, कार्यवाही और उसके फैसले सार्वकालिक अभिलेख एवं साक्ष्य के रूप में दर्ज किये जाते हैं तथा किसी अन्य अदालत में चल रहे मामलों के दौरान इन पर प्रश्न नहीं उठाया जा सकता।
- ये रिकॉर्ड विधिक संदर्भों की तरह स्वीकार किये जाते हैं। इनके पास न्यायालय की अवमानना करने पर दंडित करने का अधिकार है, यह सजा 6 माह का सामान्य कारावास या 2000 रुपये तक का आर्थिक दंड अथवा दोनों हो सकती है।
- भारतीय संविधान में भाग पांच (संघ) एवं अध्याय 6 (संघ न्यायपालिका) के तहत सर्वोच्च न्यायालय का प्रावधान किया गया है।
- संविधान के भाग पांच में अनुच्छेद 124 से 147 तक सर्वोच्च न्यायालय के संगठन, स्वतंत्रता, अधिकार क्षेत्र, शक्तियों एवं प्रक्रियाओं से संबंधित हैं।

प्रश्न: भारत में न्यायिक पुनर्विलोकन की शक्ति का प्रयोग किसके द्वारा किया जाता है?

- केवल सर्वोच्च न्यायालय के द्वारा
- सर्वोच्च न्यायालय तथा उच्च न्यायालय द्वारा
- समस्त न्यायालयों द्वारा
- उपरोक्त में से कोई नहीं

U.P.P.C.S. (Mains) 2017 Paper-II

उत्तर: (b), संविधान में अनुच्छेद 13, 32, 132, 133 व 226 के द्वारा उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय को न्यायिक पुनर्विलोकन की शक्ति दी गई है।

व्याख्या: न्यायिक समीक्षा विधायी अधिनियमों तथा कार्यपालिका के आदेशों की संवैधानिकता की जांच करने हेतु न्यायपालिका की शक्ति है, जो केंद्र एवं राज्य सरकारों पर लागू होती है।

- न्यायिक समीक्षा को संविधान की मूल संरचना (इंदिरा गांधी बनाम राज नारायण केस, 1975) माना जाता है।
- अनुच्छेद 137 सर्वोच्च न्यायालय को उसके द्वारा सुनाए गए किसी भी निर्णय या आदेश की समीक्षा करने हेतु एक विशेष शक्ति प्रदान करता है।
- भारतीय संविधान के अनुच्छेद 13(2) तथा अनुच्छेद 32 में इसकी व्यवस्था बताई गई है।

प्रश्न: नीचे दो कथन दिए गए हैं जिनमें एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है।

कथन (A): केंद्रीय कानूनों का सांविधानिक वैधता के संबंध में भारत के सर्वोच्च न्यायालय की अनन्य अधिकारिता है।

कथन (R): सर्वोच्च न्यायालय भारतीय संविधान का संरक्षक है। नीचे दिए गए कूटों में से सही उत्तर चुनिए:

कूट:

- (A) तथा (R) दोनों सही हैं तथा (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
- (A) तथा (R) दोनों सही हैं परन्तु (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
- (A) सही है किन्तु (R) गलत है।
- (A) गलत है, किन्तु (R) सही है।

U.P.P.C.S. (Pre) 2019

उत्तर: (a), सर्वोच्च न्यायालय द्वारा न्यायिक पुनर्विलोकन की शक्ति का प्रयोग संसद द्वारा निर्मित विधियों के संविधान से संगत या असंगत का परीक्षण करने के लिए किया जाता है।

- संविधान द्वारा अनुच्छेद 32, अनुच्छेद 137 के अधीन न्यायिक पुनर्विलोकन की शक्ति प्राप्त है। सर्वोच्च न्यायालय इस संबंध में अनन्य अधिकारिता का प्रयोग करता है। अतः कथन सही है।

व्याख्या: सर्वोच्च न्यायालय को संविधान के रक्षक के रूप में स्थापित किया गया है। यह किसी भी संवैधानिक संशोधन की संवैधानिकता जांच सकता है और उस विधि को निरस्त कर सकता है। अतः कारण सही है और कथन का स्पष्टीकरण है।

स्थानीय स्वशासन

29. पंचायतीराज

50. संविधान के 73वें संशोधन ने प्रावधान किया है-

1. पंचायतों के नियमित चुनाव कराने के लिए
2. महिलाओं के लिए सभी स्तरों पर सीटों के आरक्षण के लिए
3. राज्य वित्त आयोग की संस्तुति के अनुसार पंचायतों को वित्त का अनिवार्य रूप से हस्तान्तरण
4. 11वीं अनुसूची में दिए विषयों के संबंध में पंचायतों को शक्ति का अनिवार्य रूप से हस्तान्तरण

नीचे दिए कूट में से सही उत्तर का चयन कीजिए-

- (a) 1 और 2 (b) 1, 2 और 3
(c) 2, 3 और 4 (d) सभी चारों

U.P.P.C.S. (Pre) - 2023

उत्तर: (d), भारतीय संविधान के 73वें संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 द्वारा संविधान द्वारा संविधान के भाग-9 में 16 अनुच्छेद तथा ग्यारहवीं अनुसूची जोड़ी गई है, जिसमें पंचायती राजव्यवस्था के अन्तर्गत पंचायतों के नियमित चुनाव कराने, महिलाओं के लिए सभी स्तरों पर आरक्षण, राज्य वित्त आयोग के अनुसार पंचायतों को वित्त का अनिवार्य रूप से हस्तान्तरण तथा 11वीं अनुसूची में दिए विषयों के संबंध में पंचायतों के शक्ति का हस्तान्तरण का प्रावधान है।

प्रश्न: निम्नलिखित कथनों में से ग्राम सभा के संबंध में कौन-सा सत्य नहीं है?

- (a) इसके कार्य और शक्तियां ग्राम स्तर पर उसी प्रकार हैं जैसे राज्य व्यवस्थापिका के राज्य स्तर पर होते हैं।
- (b) इसकी शक्तियों का निर्धारण केंद्रीय सरकार के द्वारा होता है।
- (c) यह एक ग्राम स्तर की सभा है, जिसमें पंचायत के क्षेत्र के सभी पंजीकृत मतदाता सम्मिलित होते हैं।
- (d) (a) तथा (c) दोनों

U.P.P.C.S. (Pre) - 2023

उत्तर: (b), ग्राम सभा को एक ऐसे निकाय के रूप में परिभाषित किया गया है, जो ग्रामीण क्षेत्र में 18 वर्ष की आयु पूरी कर चुके समस्त मतदाताओं से मिलकर निर्मित होता है।

व्याख्या: ग्राम सभा मुख्य रूप से ग्राम पंचायत द्वारा किये जाने वाले सभी कार्यों की निगरानी करती है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्राम पंचायत द्वारा गांव के विकास के लिए किये जाने वाले कार्यों का पर्यवेक्षण करना होता है।

❖ ग्राम पंचायत पंचायती राज व्यवस्था की सबसे छोटी निर्वाचित इकाई होती है। ग्राम पंचायत के सदस्यों का निर्वाचन ग्राम सभा के सदस्यों द्वारा किया जाता है।

❖ ग्राम पंचायत के सदस्यों का चुनाव 5 वर्षों के लिए होता है। पंचायती राज व्यवस्था के लिए चुनाव संपन्न कराने की जिम्मेदारी राज्य चुनाव आयोग की होती है। वास्तव में, प्रत्येक राज्य में 'राज्य चुनाव आयोग' का गठन पंचायती राज चुनावों को संपन्न कराने के लिए ही किया गया है।

प्रश्न: पंचायती राज पर अशोक मेहता समिति प्रतिवेदन (1977) की प्रमुख सिफारिशों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है/हैं?

1. पंचायती राज के तीन स्तरीय व्यवस्था के स्थान पर द्वि स्तरीय व्यवस्था होनी चाहिए।
2. राज्य स्तर के नीचे पर्यवेक्षण हेतु खंड को विकेंद्रीकरण का प्रथम बिंदु माना जाना चाहिए।

नीचे दिये गए कूट से सही उत्तर का चयन चुनिए-

कूट:

- (a) केवल 1 (b) 1 तथा 2 दोनों
(c) केवल 2 (d) न तो 1 न ही 2

U.P.P.C.S. (Pre) - 2023

उत्तर: (a), अशोक मेहता समिति ने पंचायती राज संस्थाओं में तीन स्तर के संगठन के स्थान पर दो स्तरीय व्यवस्था की सिफारिश की थी।

अतः कथन 1 सत्य है जबकि दूसरा कथन असत्य है। राज्य में विकेंद्रीकरण का प्रथम स्तर जिला हो, जिला स्तर के नीचे मंडल पंचायत का गठन किया जाए, जिसमें करीब 15000-20000 जनसंख्या एवं 10-15 गांव शामिल हों,

व्याख्या: दिसंबर 1977 में पंचायती राज संस्थाओं के बारे में अध्ययन करने के लिए जनता सरकार द्वारा अशोक मेहता समिति की स्थापना की गई थी। इसने सिफारिश की थी की जिला स्तर पर जिला परिषद् और निम्न स्तर पर "मंडल पंचायत जिसे कई गांवों को मिलाकर बनाया जाना चाहिए।

अशोक मेहता समिति ने ग्राम पंचायत को समाप्त करने की संस्तुति की। इस समिति ने 2 स्तरीय पंचायती राज व्यवस्था बनाने का सुझाव दिया- जिला में जिला परिषद्, मंडल स्तर पर मंडल पंचायत। इस समिति के सुझाव को लागू नहीं किया गया।

1952 के सामुदायिक विकास कार्यक्रम की असफलता के कारणों की समीक्षा के लिए 1956 में बलवंत राय मेहता की अध्यक्षता में समिति का गठन किया गया।

समिति द्वारा 1957 में रिपोर्ट प्रस्तुत किया गया। इस समिति ने पंचायती राज व्यवस्था लागू करने पर बल दिया, जिसे "लोकतांत्रिक विकेंद्रीकरण" का नाम दिया गया।